ध्याय-5- उन्नीसवीं सदी के पूर्वार्ध में सामाजिक और सांस्कृतिक जागरण

A. इस जागरण के मुख्य नेता राममोहन राय थे जिन्हें आधुनिक भारत का प्रथम नेता मानना एकदम उचित है।

B. राममोहन राय के मन में प्राच्य दार्शनिक विचार-धाराओं के प्रति गहन प्रेम और आदर था, लेकिन वे यह भी सोचते थे कि केवल पश्चिमी संस्कृति से ही भारतीय समाज का पुनरुत्थान संभव था, वे यह भी चाहते थे कि देश में आधुनिक पूंजीवादी उद्योग आरम्भ किए जाएं,

C. राममोहन राय प्राच्य और पाश्चात्य चिंतन के संश्लिष्ट (मिले-जुले) रूप के प्रतिनिधि थे वे विद्वान थे और संस्कृत, फारसी, अरबी, अंग्रेजी, फ्रांसीसी, ग्रीक और हिब्रू सहित एक दर्जन से अधिक भाषाएँ जानते थे, युवावस्था में उन्होंने वाराणसी में संस्कृत साहित्य और हिंदू दर्शन तथा पटना में कुरान और फारसी तथा अरबी साहित्य का अध्ययन किया था,

D. मूल बाइबिल का अध्ययन करने के लिए उन्होंने ग्रीक और हिब्रू भाषाएँ सीखीं, उन्होंने 1809 में फारसी में अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "एकेश्वरवादियों को उपहार" (Gift to Monotheists) लिखी, जिसमें इन्होंने अनेक देवताओं में विश्वास के विरुद्ध और एकेश्वरवाद के पक्ष में वजनदार तर्क दिये,

E. वे 1814 में कलकत्ता में बस गए और आत्मीय सभा आरंभ की, तब से लेकर जीवन भर बंगाल के हिन्दुओं में प्रचलित धार्मिक और सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ उन्होंने एक जोरदार संघर्ष किया (चलाया), विशेष रूप से उन्होंने मूर्तिपूजा, जाति की कट्टरता और निरर्थक धार्मिक कृत्यों के प्रचलन का जोरदार विरोध किया,

F. उन्होंने वेदों और पाँच प्रमुख उपनिषदों के बंगला अनुवाद प्रकाशित किए, उन्होंने एकेश्वरवाद के समर्थन में कई पुस्तक पुस्तिकाएँ लिखीं,

G. उनकी धारणा थी कि वेदांत-दर्शन मानवीय तर्क शक्ति पर आधारित है, किसी भी स्थिति में आदमी को तब पवित्र ग्रन्थों, शास्त्रों और विरासत में मिली परम्पराओं से हट जाने में नहीं हिचकिचाना चाहिए जब मानवीय तर्क शक्ति का वैसा तकाजा हो और वे परम्पराएँ समाज के लिए हानिकारक सिद्ध हो रही हैं,

H. उन्होंने 1820 में 'प्रीसेप्ट्स ऑफ जीसस' नाम की पुस्तक प्रकाशित की जिसमें उन्होंने न्यू टेस्टामेंट के नैतिक और दार्शनिक संदेश को इसकी चमत्कारी कहानियों से अलग करने की कोशिश की, उन्होंने "न्यू टेस्टामेंट" के नैतिक और दार्शनिक संदेश की प्रशंसा की, वे चाहते थे कि ईसा मसीह के उच्च नैतिक संदेश को हिंदू धर्म में समाहित कर लिया जाए, इससे ईसाई धर्म प्रचारक उनके विरोधी बन गये,

I. राममोहन राय का मानना था कि न तो भारत के भूतकाल पर आँखें मूंदकर निर्भर रहा जाए और न ही पश्चिम का अंधानुकरण किया जाए, उन्होंने ये विचार रखे कि विवेक बुद्धि का सहारा लेकर नए भारत को सर्वोत्तम प्राच्य और पाश्चात्य विचारों को प्राप्त कर संजो रखना चाहिए, अत: उन्होंने चाहा कि भारत पश्चिमी देशों से सीखे, मगर सीखने की यह क्रिया एक बौद्धिक और सर्जनात्मक प्रक्रिया हो जिसके द्वारा भारतीय संस्कृति और चिंतन में जान डाल दी जाए, इस प्रक्रिया का अर्थ भारत पर पाश्चात्य संस्कृति को थोपना नहीं हो,

राजा राम मोहन राय

(1) भारत का प्रथम नेता
(2) पश्चिमी संस्कृति
(3) मिले-जुले रूप के प्रतिनिधि थे
(4) वाराणसी - संस्कृत
(5) पटना - अरबी
(6) 1809 - Gift to Monotheist
(7) 1814 - कलकत्ता आत्मीय सभा
(8) वेद व 5 उपनिषद का बंगला अनुवाद
(9) वेदांत - मानवीय तर्क शक्ति पर आधारित
(10) 1820 - प्रीसेप्ट्स आफ जीसस
(11) ईसाई धर्म प्रचारक उनके विरोधी हुए
(12)

DR. AFROZE EQBAL
Net, Ph-D
Phone No- 09997922069
Contact for Free Career Counselling for Competitive Exams

Scanned with CamScanner

J. वे हिंदू धर्म में सुधार के हिमायती और हिंदू धर्म की जगह ईसाई धर्म लाने के विरोधी थे, उनका विश्वास था कि बुनियादी तौर पर सभी धर्म एक ही संदेश देते हैं कि उनके अनुयायी भाई-भाई हैं

K. रूढ़िवादियों ने मूर्ति पूजा की आलोचना तथा ईसाई धर्म और इस्लाम की दार्शनिक दृष्टिकोण से प्रशंसा करने के कारण उनकी निंदा की, उन्होंने उनका सामाजिक तौर पर बहिष्कार किया, उनकी माँ ने भी बहिष्कार करने वालों का साथ दिया, उन्हें विधर्मी और जातिबहिष्कृत कहा गया,

L. उन्होंने 1828 में ब्रह्म सभा नाम की एक नई धार्मिक संस्था की स्थापना की जिसको बाद में ब्रह्मसमाज कहा गया। इसका उद्देश्य हिंदू धर्म को स्वच्छ बनाना और एकेश्वरवाद की शिक्षा देना था, नई संस्था के दो आधार थे, तर्क शक्ति और वेद तथा उपनिषद,

M. ब्रह्मसमाज ने मानवीय प्रतिष्ठा पर जोर दिया, मूर्तिपूजा का विरोध किया तथा सती प्रथा जैसी सामाजिक कुरीतियों की आलोचना की,

N. सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध उनके आजीवन जेहाद का सबसे बढ़िया उदाहरण अमानवीय सती प्रथा के खिलाफ ऐतिहासिक आंदोलन था, उन्होंने 1818 में इस प्रश्न पर जनमत खड़ा करने का काम आरंभ किया। वे कलकत्ता के श्मशानों में जाते और विधवाओं के रिश्तेदारों से उनके आत्मदाह के कार्यक्रम को त्याग देने के लिए समझाते-बुझाते,

O. जब रूढ़िवादी हिंदुओं ने संसद को याचिका दी कि वह सती प्रथा पर पाबंदी लगाने संबंधी बैंटिक की कार्रवाई को मंजूरी न दे तब उन्होंने बैंटिक की कार्रवाई के पक्ष में प्रबुद्ध हिंदुओं की ओर से एक याचिका दिलवाई,

P. उन्होंने औरतों की परवशता की निंदा की तथा इस प्रचलित विचार का विरोध किया कि औरतें पुरुषों से बुद्धि में या नैतिक दृष्टि से निकृष्ट हैं, उन्होंने बहुविवाह तथा विधवाओं की अवनत स्थिति की आलोचना की, औरतों की स्थिति को सुधारने के लिए उन्होंने मांग की कि उन्हें विरासत और संपत्ति संबंधी अधिकार दिए जाएं,

Q. डेविड हेयर ने 1817 में कलकत्ता में प्रसिद्ध हिंदू कालेज की स्थापना की, वह 1800 में एक घड़ीसाज के रूप में भारत आया था, मगर उसने अपनी सारी जिंदगी देश में आधुनिक शिक्षा के प्रसार में लगा दी, हिंदू कालेज की स्थापना और उसकी अन्य शिक्षा सम्बन्धी परियोजनाओं के लिए राममोहन राय ने हेयर के अत्यन्त जोरदार समर्थन दिया,

R. उन्होंने कलकत्ता में 1817 में अपने खर्चे से एक अंग्रेजी स्कूल चलाया जिसमें अन्य विषयों के साथ ही यांत्रिकी (Machanics) और वाल्तेयर के दर्शन की पढ़ाई होती थी,

S. उन्होंने 1825 में एक वेदान्त कालेज की स्थापना की जिसमें भारतीय विद्या और पाश्चात्य सामाजिक तथा भौतिक विज्ञानों की पढ़ाई की सुविधाएँ उपलब्ध थीं,

T. उन्होंने बंगला व्याकरण पर एक पुस्तक की रचना की, अपने अनुवादों, पुस्तिकाओं तथा पत्र-पत्रिकाओं के जरिये बंगला भाषा की एक आधुनिक और सुरुचिपूर्ण शैली विकसित करने में उन्होंने सहायता दी,

U. भारत में राष्ट्रीय चेतना के उदय की पहली झलक का राममोहन राय प्रतिनिधित्व करते थे; उन्होंने जाति प्रथा की कट्टरता का विशेष रूप से विरोध किया, जो उनके अनुसार हमारे बीच एकता के अभाव का स्रोत रहा है, उनके अनुसार धार्मिक सुधार का एक लक्ष्य राजनीतिक उत्थान था,

V. राममोहनराय भारतीय पत्रकारिता के अग्रदूत थे, उन्होंने बंगला, फारसी, हिंदी और अंग्रेजी में पत्र-पत्रिकाएं निकालीं,

① * उनका बहिष्कार किया गया

② 1828 – ब्रह्म-समाज – (ब्रह्म सभा)

③ मूर्ति पूजा का विरोध, सती प्रथा

④ 1818 – जनमत तैयार किया

⑤ डेविड हेयर – 1817 – कलकत्ता में हिंदू कालेज – घड़ी साज – एक अंग्रेजी स्कूल खोली

⑥ 18-25 – वेदान्त कॉलेज

⑦ बंगला व्याकरण पर एक पुस्तक

⑧ भारतीय पत्रकारिता के अग्रदूत – बंगला, फारसी, हिंदी और अंग्रेजी में पत्रिकाएं

DR. AFROZE EQBAL
Net, Ph-D
Phone No- 09997922039
Contact for Free Career Counselling for Competitive Exams

Scanned with CamScanner

W. वे देश के राजनीतिक प्रश्नों पर जन-आंदोलन के प्रवर्तक भी थे, उन्होंने मांग की कि वास्तविक किसानों द्वारा दिए जाने वाले अधिकतम लगान को सदा के लिए निश्चित कर दिया जाना चाहिए जिससे वे भी 1793 के स्थायी बंदोबस्त से फायदा उठा सकें, उन्होंने लाखिराज (Rent Free) जमीन पर लगान निर्धारित करने के प्रयासों के प्रति भी विरोध प्रकट किया,

X. उन्होंने कम्पनी के व्यापारिक अधिकारों को खत्म करने तथा भारतीय वस्तुओं पर से भारी निर्यात शुल्कों को हटाने की भी मांग की और उच्च सेवाओं के भारतीयकरण कार्यपालिका और न्यायपालिका को एक दूसरे से अलग करने, जूरी के जरिए मुकदमों की सुनवाई और भारतीयों तथा यूरोपवासियों के बीच न्यायिक समानता की भी उन्होंने मांग की,

राम मोहनराय

① अन्तर्राष्ट्रीय मुक्त सहयोग में विश्वास

② अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं में गहरी दिलचस्पी - 1821 - नेपल्स, 1823 - स्पेनिश अमेरिका क्रांति (सार्वजनिक भोज)

③ डेविड हेअर, अलेक्जेंडर डफ, द्वारका नाथ टैगोर सर्वप्रमुख

Y. अन्तर्राष्ट्रीयता और राष्ट्रों के बीच मुक्त सहयोग में राममोहन राय का पक्का विश्वास था,

Z. कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने ठीक ही लिखा है "राममोहन अपने समय में, संपूर्ण मानव समाज में एकमात्र व्यक्ति थे जिन्होंने आधुनिक युग के महत्व को पूरी तरह समझा, वे जानते थे कि मानव सभ्यता का आदर्श अलग-अलग रहने में नहीं बल्कि चिंतन और क्रिया के सभी क्षेत्रों में व्यक्तियों तथा राष्ट्रों के आपसी भाई-चारे में निहित है।

1. राममोहनराय ने अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं में गहरी दिलचस्पी ली, 1821 में नेपल्स में क्रांति की विफलता की खबर से वे इतने दुखी हो गए कि उन्होंने अपने सारे सामाजिक कार्यक्रमों को रद्द कर दिया, दूसरी ओर स्पेनिश अमरीका में 1823 में क्रांति की सफलता पर उन्होंने एक सार्वजनिक भोज देकर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की, आयरलैंड की दुस्थ जमींदारों के उत्पीड़क राज में दयनीय स्थिति की उन्होंने निंदा की,

2. उन्होंने सार्वजनिक रूप से घोषणा की कि अगर संसद रिफार्म बिल पास करने में असफल रही तो वे ब्रिटिश साम्राज्य छोड़कर चले जायेंगे,

3. शिक्षा के क्षेत्र में डच घड़ीसाज डेविड हेअर और स्काटिश धर्म प्रचारक अलेक्जेंडर डफ ने उनकी बड़ी सहायता की, अनेक भारतीय सहयोगियों में द्वारका नाथ टैगोर सबसे प्रमुख थे, उनके अन्य प्रमुख अनुयायी थे प्रसन्न कुमार टैगोर, चंद्रशेखर देव और ब्रह्म सभा के प्रथम मंत्री ताराचंद चक्रवर्ती,

यंग बंगाल

① हेनरी विवियन

② 1826 - 31 हिन्दू कालेज में पढ़ाया

③ 22 वर्ष की अवस्था में हैजे से मरे

4. यंग बंगाल आंदोलन के नेता और प्रेरक नौजवान एंग्लो इंडियन हेनरी विवियन डेरोजिओ था, उसने 1826 से 1831 तक हिंदू कालेज में पढ़ाया, उसने उन छात्रों को विवेकपूर्ण और मुक्त ढंग से सोचने, सभी आधारों की प्रमाणिकता की जांच करने, मुक्ति, समानता और स्वतंत्रता से प्रेम करने तथा सत्य की पूजा करने के लिए प्रेरित किया, डेरोजिओ आधुनिक भारत का शायद प्रथम राष्ट्रवादी कवि था,

5. डेरोजिओ को उसकी क्रांतिकारिता के कारण 1831 में हिन्दू कालेज से हटा दिया गया और वह उसके तुरंत बाद 22 वर्ष की युवावस्था में हैजे से मर गया,

DR. AFROZE EQBAL
Net, Ph-D
Phone No- 09997922069
Contact For Free Career Counselling for Competitive Exams

Scanned with CamScanner

6. उसके अनुयायियों ने पुरानी और ह्रासोन्मुख प्रथाओं, कत्यों और रिवाजों की घोर आलोचना की, वे नारी अधिकारों के पक्के हिमायती थे, उन्होंने नारी शिक्षा की मांग की किन्तु वे किसी आंदोलन को जन्म देने में सफल नहीं हुए क्योंकि उनके विचारों को फलने-फूलने के लिए सामाजिक स्थितियाँ उपयुक्त नहीं थीं, वे जनता के साथ अपने सम्पर्क नहीं बना सके, वस्तुतः उनकी क्रांतिकारी किताबी थी। वे भारतीय वास्तविकता को पूरी तरह से समझने में असफल रहे।

सुरेन्द्रनाथ बनर्जी

बंगाल में आधुनिक सभ्यता के अग्रदूत

7. राष्ट्रीय आंदोलन के प्रसिद्ध नेता सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने डेरोजियो के अनुयायियों को "बंगाल में आधुनिक सभ्यता के अग्रदूत, हमारी जाति के पिता कहा जिनके सद्गुण उनके प्रति श्रद्धा पैदा करेंगे और जिनकी कमजोरियों पर कुछ विशेष ध्यान नहीं दिया जाएगा।

ⓑ तत्वबोधिनी सभा - 1839

राममोहन राय के विचार

ⓒ 1843 - देवेन्द्रनाथ ठाकुर - ब्रह्म समाज का पुनर्गठन

8. ब्रह्मसमाज बना रहा मगर उसमें कोई खास दम नहीं था, रवीन्द्रनाथ ठाकुर के पिता देवेन्द्रनाथ ठाकुर ने उसे पुनर्जीवित किया, देवेन्द्रनाथ भारतीय विद्या की सर्वोत्तम परंपरा तथा नवीन पाश्चात्य चिंतन की उपज थे,

9. उन्होंने राममोहन राय के विचारों के प्रचार के लिए 1839 में तत्वबोधिनी सभा की स्थापना की, उसमें राममोहन राय और डेरोजियो के प्रमुख अनुयायी तथा ईश्वरचन्द्र विद्यासागर और अक्षय कुमार दत्त जैसे स्वतंत्र चिंतक शामिल हो गये,

10. तत्वबोधिनी सभा और उसके मुख्य पत्र "तत्वबोधिनी पत्रिका" ने बंगला भाषा में भारत के सुव्यवस्थित अध्ययन को बढ़ावा दिया,

11. वर्ष 1843 में देवेन्द्रनाथ ठाकुर ने ब्रह्मसमाज का पुर्नगठन किया और उसमें नया जीवन डाला, समाज ने सक्रिय रूप से विधवा पुर्नविवाह, बहुविवाह के उन्मूलन, नारी शिक्षा, रैयत की दशा में सुधार और आत्म संयम के आंदोलन का समर्थन किया,

ईश्वर चन्द्र विद्यासागर

① संस्कृत पढ़ाने की नई तकनीक

② बंगला वर्णमाला लिखी

③ पहला कानूनी हिन्दू विधवा पुनर्विवाह कलकत्ता में 7 दिसम्बर 1856

12. पंडित ईश्वरचन्द्र विद्यासागर महान विद्वान और समाज सुधारक थे, उनका जन्म 1820 में एक गरीब परिवार में हुआ था उन्होंने 1851 में संस्कृत कालेज के प्रिंसिपल के पद पर पहुंचे यद्यपि वे संस्कृत के बहुत बड़े विद्वान थे तथापि उनके दिमाग के दरवाजे पाश्चात्य चिंतन में जो कुछ सर्वोत्तम था उसके लिए खुले हुए थे,

13. उन्होंने सरकारी सेवा से त्यागपत्र दे दिया क्योंकि वे अनुचित सरकारी हस्तक्षेप को बर्दाश्त नहीं कर सके, शायद ही कभी उनके पास कोई गर्म कोट रहा क्योंकि निरपवाद रूप से उन्होंने अपना कोट जो भी नंगा सड़क पर पहले मिला उसे दे दिया,

14. उन्होंने संस्कृत पढ़ाने के लिए नई तकनीक विकसित की, उन्होंने एक बंगला वर्णमाला लिखी जो आज तक इस्तेमाल में आती है उन्होंने अपनी रचनाओं द्वारा बंगला में आधुनिक गद्य शैली के विकास में सहायता दी, उन्होंने संस्कृत कालेज के दरवाजे गैर-ब्राह्मण विद्यार्थियों के लिए खोल दिये क्योंकि वे संस्कृत के अध्ययन पर ब्राह्मण जाति के तत्कालीन एकाधिकार के विरोधी थे,

DR. AFROZE EQBAL
Net, Ph.D
Phone No- [illegible]
Contact for Free Career Counselling for Competitive Exams

Scanned with CamScanner

15. उन्होंने विधवा पुनर्विवाह के लिए एक लम्बा संघर्ष चलाया, उन्होंने 1855 में विधवा पुनर्विवाह के पक्ष में अपनी शक्तिशाली आवाज उठाई और इस काम में अगाध परंपरागत विद्या का सहारा लिया, यह आंदोलन सफल रहा और एक कानून बनाया गया, हमारे देश की उच्च जातियों में पहला कानूनी हिंदू विधवा पुनर्विवाह कलकत्ता में 7 दिसंबर, 1856 में विद्यासागर की प्रेरणा से और उनकी ही देख-रेख में हुआ,

① शांतिपुर के बुनकर - विद्यासागर चिरंजीवी हों।

a. एक प्रत्यक्ष-द्रष्टा ने उपर्युक्त विधवा पुनर्विवाह समारोह का वर्णन निम्नलिखित शब्दों में किया है "मैं वह दिन कभी नहीं भूला पाऊंगा शांतिपुर के बुनकरों ने एक विशिष्ट प्रकार की स्त्रियों की साड़ी तैयार की जिसके किनारे पर एक नव-रचित गीत की पंक्ति बुनी गयी थी जिसमें कहा गया था "विद्यासागर चिरंजीवी हों"

② 35 बालिका विद्यालय स्थापित
③ बेथुन स्कूल - 1849

b. विद्यासागर ने 1850 में बालविवाह का विरोध किया, उन्होंने जीवन भर बहुविवाह के विरुद्ध आंदोलन चलाया, वे नारी शिक्षा में भी गहरी दिलचस्पी रखते थे, स्कूलों के सरकारी निरीक्षक की हैसियत से उन्होंने 35 बालिका विद्यालयों की स्थापना की जिनमें से कईयों को उन्होंने अपने खर्च से चलाया, बेथुन स्कूल के मंत्री की हैसियत से वे उच्च नारी शिक्षा के अग्रदूतों में से थे, बेथुन स्कूल की स्थापना 1849 में कलकत्ता में हुई।

c. लड़कियों को आधुनिक शिक्षा देने में सबसे पहले 1821 में ईसाई धर्म प्रचारकों ने कदम उठाये.

लड़कियों में शिक्षा

① सर्वप्रथम ईसाई धर्मप्रचारकों ने 1821 में
② बाल शास्त्री जांबेकर प्रथम सुधारक थे - ब्राह्मणवादी कट्टरता की आलोचना "दर्पण" - साप्ताहिक पत्र
③ परमहंस मंडली - 1849
④ 1851 - ज्योतिबा फुले - पूने में लड़कियों के लिए स्कूल जगन्नाथ सेठ, भाऊ दाजी
⑤

d. बम्बई के बाल शास्त्री जांबेकर प्रथम सुधारकों में से थे जिन्होंने ब्राह्मणवादी कट्टरता की आलोचना की और हिन्दुओं की आम प्रथाओं में सुधार लाने की कोशिश की, वर्ष 1832 में उन्होंने 'दर्पण' नाम के एक साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन आरंभ किया,

e. 1849 में महाराष्ट्र में "परमहंस मंडली" की स्थापना की गई, इसके संस्थापक एक ईश्वर में विश्वास रखते थे तथा मूल रूप से उनकी दिलचस्पी जातपात के बंधनों को तोड़ने में थी, जब इसकी बैठक होती थी तब इसके सदस्य तथाकथित नीच जातियों के हाथ का पकाया हुआ भोजन करते थे, विधवा विवाह और स्त्री शिक्षा में भी विश्वास करते थे,

f. कुछ पढ़े-लिखे युवकों ने मिलकर 1848 में छात्रों की एक साहित्यिक और वैज्ञानिक संस्था बनाई, इसकी दो शाखाएँ थीं गुजराती और मराठी ज्ञान प्रसारक मंडलियां, यह मंडलियाँ सामाजिक प्रश्नों और आम वैज्ञानिक विषयों पर व्याख्यान आयोजित किया करती थीं, महिलाओं की शिक्षा के लिए स्कूल आरंभ करना भी इस संस्था के लक्ष्यों में एक लक्ष्य था,

g. वर्ष 1851 में ज्योतिबा फुले और उनकी पत्नी ने पूना में लड़कियों का एक स्कूल खोला, इसके तत्काल बाद और कई स्कूल खुल गये, इन स्कूलों को सक्रिय रूप से बढ़ावा देने वालों में जगन्नाथ सेठ और भाऊ दाजी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है,

h. फुले महाराष्ट्र में विधवा विवाह आंदोलन की अगली पंक्ति के नेता थे, वर्ष 1850 में विष्णु शास्त्री पंडित ने "विधवा विवाह समाज" स्थापित किया, करसोनदास मूलजी इस क्षेत्र के दूसरे महत्वपूर्ण कार्यकर्ता थे, वर्ष 1852 में उन्होंने गुजराती भाषा में विधवा विवाह के समर्थन के लिए "सत्य प्रकाश" नाम की पत्रिका निकाली, महाराष्ट्र में स्त्री शिक्षा और नए सामाजिक सुधारों के प्रवक्ता गोपाल हरि देशमुख थे, जो आगे चलकर "लोकहितवादी" उपनाम से विख्यात हुए,

DR. AFROZE EQBAL
Net, Ph-D
Phone No- 09997022069
Contact for Free Career Counselling for Competitive Exams

Scanned with CamScanner

i. ज्योतिबा फुले नीची मानी जाने वाली माली जाति में पैदा हुए थे, महाराष्ट्र के गैर-ब्राह्मण और ~~अछ~~ अछूत जातियों की दयनीय सामाजिक स्थिति को वे भी अच्छी तरह समझते थे, ऊँची जातियों के प्रभुत्व और ब्राह्मणों की श्रेष्ठता के खिलाफ वे जीवन भर अभियान चलाते रहे।

ज्योतिबा फुले
(1) माली जाति

j. दादा भाई नौरोजी बम्बई के एक और प्रमुख समाज सुधारक थे, वे "~~फ~~ पारसी धर्म सुधार संगठन" के संस्थापकों में से थे, इस संगठन ने महिलाओं को कानूनी हक दिलाने के लिए तथा पारसी लोगों की शादी और उत्तराधिकार संबंधी समान कानून बनाने के लिए आंदोलन किए।

k. सुधारकों ने शुरू से अपना संघर्ष मुख्य रूप से भारतीय भाषाओं के अखबारों और साहित्य के माध्यम से चलाया, भारतीय भाषाएँ अपनी भूमिका सफलतापूर्वक निभा सकें, इसके लिए इन्होंने प्रारंभिक पाठ्यपुस्तकें बनाने जैसा काम भी अपने हाथ में लिया, उदाहरण के लिए ईश्वर चन्द्र विद्यासागर तथा रवीन्द्रनाथ ठाकुर, दोनों ही महानुभावों ने बंगला की प्रारंभिक कक्षाओं के लिए पाठ्य-पुस्तकें तैयार कीं।

DR. AFROZE EQBAL
Net, ...D
Phone No- 09997... ...39
Contact for Free Career Counselling
for Competitive Exams

Scanned with CamScanner